कुछ ना कुछ सुनने से फिर भी बाप की स्मृति तो रहती है ना। बाप की स्मृति पाई तो रचना की स्मृति पाई। रचता ज़रूर रचना का सारा ज्ञान सुनावेंगे। ऋषि–मुनि आदि सब कहते थे हम नहीं जानते। रचता ही रचना की नालेज बताते हैं। रचता पावन बनने की युक्ति भी सिखाते हैं और आदि,मध्य,अंत का नालेज भी सुनाते हैं। त्रिकालदर्शी बनने से फिर वो ही खयालात रहते हैं। स्टूडेंट को पढ़ाई ज़रूर याद रहती है। भल शादी आदि कहाँ भी जावे याद रखना है अपनी स्टडी और टीचर को। बच्चों को स्मृति है तो खुश रहते हैं। नहीं तो फिर कोई ना कोई उल्टा–सुल्टा काम रहता है। इस ज्ञान में बड़ा चुस्त रहना होता है। कितना भी अपन को अच्छा समझते हैं फिर भी माया वार कर लेती है। बाबा खुद बताते हैं याद भूल जाती है। माया के तूफान आते हैं। फिर किसको बहुत, किसको थोड़े। सम्पूर्ण कोई बना नहीं है। बहुत तूफान आने वाले को खबरदार रहना चाहिए, नहीं तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। जिस घर में बहुत मेहमान आते हैं उनको भाग्यशाली समझते हैं। यह तो है बाप का घर। बच्चों को मंसा,वाचा,कर्मणा सर्विस करनी है। मेहमानों की पूरी खातरी करनी चाहिए। बाबा जानते हैं कौन एक/दो का रिगार्ड रखते हैं और सर्विस करते हैं। एक/दो में लून–पानी होते हैं वो डिससर्विस ज़रूर करते हैं। यज्ञ की सर्विस तो कोई महान सौभाग्यशाली को मिले। जब ब्राह्मण बनते हैं तो सुखधाम के मालिक ज़रूर बनते हैं। वहाँ तो अपार सुख है। यहाँ भी बड़े आदमी पास सुख रहते हैं। आराम के लिए तुम बच्चों को भी विश्राम पाना है। भक्तिमार्ग वाले ऐसे नहीं समझते इससे हमने दुर्गति को पाया है। गति भी नहीं, चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी बाप से दूर रहे। भक्तिमार्ग में बाप को ज़रूर याद करते हैं। हे भगवान, हे राम कहते हैं। भगवान वा राम, परमात्मा एक ही है। दुःख के समय भी बाप को ही याद करते हैं। गाया भी जाता है दुःख में सिमरण सब... बड़ा मर्तबा पाने लिए मेहनत तो करनी है ना। गरीब और साहुकार का फर्क तो रहता है ना। मनुष्य हरेक बात में पुरुषार्थ करते हैं कि बहुत धन हो। धन होगा तब तो सोने–हीरों के मकान बनावेंगे; क्योंकि पुरुषार्थ कर ऊँच पद पाना है।बच्चों को तो बहुत चांस है। बाप कहते हैं काम करते रहो, बाप को याद करते रहो। याद करने की कमाई बहुत है। तूफान भी इस याद में आते हैं। तुम बच्चों को नम्बरवन फर्स्ट क्लास युक्ति बताते हैं बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बच्चों को आज्ञा भी मानना चाहिए ना। वो है सुख के लिए आज्ञा। जितना जो करेंगे अपने लिए ही करेंगे। याद ना कर सके, अच्छा, कोई को परिचय देते रहो। बाप ने वर्सा दिया था। फिर रावण राज्य हुआ। सीढ़ी उतरते आये। अब फिर बाप आया है। रोज़ समझाते रहते हैं बाप की याद में रहना है। एक/दो को याद दिलाना है। मीठे–2 बच्चों को मीठा–2 बाप अच्छी रीति याद आना चाहिए। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। यह तो निश्चय है वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। जितना हो सके, फुर्सत मिले तो याद में लग जाना चाहिए। 84 जन्मों की सीढ़ी तो बुद्धि में होगी ही। मंसा,वाचा,कर्मणा सर्विस। यह सब सब्जेक्ट्स हैं। जितना जो करेगा उतना पावेगा। टाइम बहुत वैल्युएबल है। कमाई का समय है तो वो वेस्ट ना करना चाहिए। ऊँच पद पाने लिए पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। ऐसा कमाई का समय एक ही बार मिलता है। जितना समय मिले। बच्चों को सर्विस के लिए भेजने लिए तो हम तैयार ही हैं। बाबा गाँव–2 में यह प्रदर्शनी देंगे। कछ में 12–23 चित्र भी ले यह गया। सीढ़ी तो बहुत मुख्य है। यह बहुत अच्छी है। बाबा तो मैगज़ीन में भी प्रदर्शनी के यह रंगीन चित्र निकलवाते हैं। शिवबाबा के बच्चे ढेर हैं। यह डेयानेशन(डोनेशन) की बात नहीं। यहाँ तो बच्चा बनने की बात है। बच्चा बनेंगे ऐसे बाप का। तो बच्चा और बाप अलग होता है क्या? समझाया जाता है बच्चे कब बाप को डेयोनेशन(डोनेशन) देंगे क्या? बाप तो वर्सा देते हैं बादशाही का। तो बाप पैसा क्या करेंगे? सर्विस में लगा देंगे। भाई–बहनों को सर्विस में मदद करनी है। बाकी यहाँ डोनेशन की बात नहीं। हमारा निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासियों से कोई कनेक्शन नहीं है। अब तुमको श्रीमत मिलती है। श्रीमत भगवान ही देते हैं। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत से श्रेष्ठ पद भी मिलता है। जितना ऊँच मत उनको श्रेष्ठ कहा जाता है। तुमको श्री–2 बाबा पढ़ाते हैं श्री देवता बनाने लिए। अच्छा।